<u>दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास</u>

मई – 2009

समय : 10.00 से 1.00 बजे तक

दिनांक :10.05.2009

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

बी.ए. (प्रथम वर्ष) परीक्षा

विषय : हिंदी (अनिवार्य) प्रश्न पत्र : 3

शीर्षक : भक्तिकालीन काव्य

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

I. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं *तीन* के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

3x10=30

1. जायसी के काव्य की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
2. ''जाके प्रिय न राम वैदेही'' पद के माध्यम से तुलसी की भक्ति भावना को स्पष्ट कीजिए।
3. सूरदास के वात्सल्य वर्णन की विशेषताओं पर उद्धरणों से एक पुष्ट निबंध लिखिए।
4. कबीरदास के काव्य की विशेषताओं का परिचय दीजिए।
5. कृष्ण के प्रति मीरा के प्रेम की व्याख्या कीजिए।

II. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं *चार* के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए।

4x5=20

1. जायसी का जीवन परिचय दीजिए।
2. **राम–भरत मिलन** प्रसंग में चित्रित 'भ्रातृप्रेम' को स्पष्ट कीजिए।

3. तुलसीदास ने अपने समय के समाज का जो चित्रण किया है उसका विश्लेषण कीजिए।

4. **सूरदास** का जीवन परिचय लिखिए।

5. **कबीरदास** की रहस्यवादी प्रेम भावना को लिखिए।

6. **मीराबाई** का जीवन परिचय लिखिए।

7. **चढ़ा आसाढ़** में जायसी ने वर्षाऋतु का जो वर्णन किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

8. 'सूरदास ने गोपियों की विरह दशा का सुन्दर चित्रण किया है'। इस कथन की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

III. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 5x5=25

1. अगहन देवस घटा निसि बाढ़ी। दूभर दुख सो जाइ किमि काढ़ी।
अब धनि देवस बिरह भा राती। जरै बिरह ज्यों दीपक बाती।
काँपा हिया जानवा सीऊ। तौ पै जाइ होइ सँग पीऊ।
घर घर चीर रचा सब काहूँ । मोर रूप रँग लै गा नागूँ।
पलटि न बहुरा गा जो बछोई। अबहूँ फिरैं फिरैं रँग सोई।
सियरि अगिनि बिरहै हिय जारा। सुलगि सुलगि दगधै भै धारा।
यह दुख दगध न जानै कंतू। जोबन जरम करै भसमंतू।
पिय सौं कहेहु सँदेसरा ऐ भँवरा ऐ काग।
सो धनि बिरहें जरि गई तेहिक धुआं हम लाग।।

(अथवा)

पूस जाड़ थरथर तन काँपा। सुरुज जड़ाइ लंक दिसि तापा।
बिरह बाढ़ि भा दारुन सीऊ। काँप कँपि मरों लेहि हरि जीऊ।

कंत कहाँ हौं लागौं हियरें। पंथ अपार सूझ नहिं नियरें।
सौर सुमति आवै जूड़ी। जानहूँ सेज हिवंचल बूड़ी।
चकई निसि बिछुरै दिन मिला। हौं निसि बासर बिरह कोकिला।
रैनि अकेलि साथ नहि सखी, कैसे जिऔं बिछोही पँखी।

बिरह सैचान भँवें तन चाँड़ा। जीयत खाइ मुएँ नहिं छाँड़ा।
रकत ढरा माँसू गरा हाड़ भए सब संख।
धनि सारस होइ ररि मुई आई समटहु पंख।।

2. खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, भलि,
बनिकको बनिज, न चाकरको चाकरी।
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों 'कहाँ जाई, का करी?'
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत,
साँकरे सबै पै, राम! रावरें कृपा करी।
दारिद–दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु।
दुरित–दहन देखि तुलसी हहा करी।।

(अथवा)

तू दयालु, दीन हौं तू दानि हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुंज हारी।।
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मो–सो?
मो–समान आरत नहिं, आरतिहर तो–सो।।
ब्रह्म तू, हौं जीव, तू ठाकुर, हौं चेरो।
तात,मात, गुरू, सखा, तू सब विधि हितु मेरो।।

तोहि मोहि नाता अनेक मानिये जो भावै।
ज्यौं त्यौं तुलसी कृपालु चरन–सरन पावै।।

3. सिखवति चलन जसोदा मैया।
अरबराइ कर पानि गहावत डगमगाइ धरनी धरे पैया।।
कबहुँक सुंदर बदन बिलोकति उक आनंद भरि लेति बलैया।
कबहुँक कुल देवता मनावीत चिरजीवहु मेरौ कुँबर कन्हैया।।
कबहुँक बल कौ टेरि बुलावति इहि आँगन खेलौ दोऊ भैया।
सूरदास स्वामी की लीला अदि प्रताप बिलसत नंदरैया।।

(अथवा)

मधुकर स्याम हमारे ईस ।
तिनकौ ध्यान धरैं निसि बासर, औरहिं नवै न सीस।।
जोगिनि जाइ जोग उपदेसहु, जिनके मन दस बीस।
एकै चित एकै वह मूरति,तिन चितवतिं दिन तीस।।
काहें निरगुन ग्यान आपनौ, जित कित डारत खीस।
'सूरदास' प्रभु नंदनँदन बिनुं, हमरे को जगदीस।।

4. मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरौ न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।।
छाँड़ि दी कुल की कानि कहा करै कोई।
संतन ढिग बैठि–बैठि लोक लाज खोई।।
अँसुवन जल सीचिं–सीचिं प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेलि फैल गई आनंद फल होई।।
भगति देखि राजी भई, जगत देखि रोई।

दासी मीराँ लाल गिरिधर तारो अब मोई।।

(अथवा)

बसो मेरे नैनन में नँदलाल।

मोर मुकुट मकराकृत कुँडल, अरुण तिलक दिए भाल।

मोहनि मूरति साँवरि सूरति, नैना बने बिसाल।

अधर–सुधा–रस मुरली राजत, उर बैजंती–माल।

छुद्र घंटिका कटि–तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।

मीराँ प्रभु संतन सुखदाई, भक्त बछल गोपाल।।

5. दुर्लभ मानुष जनम है, देह न बारंबार।

तरुवर ज्यों पत्ता झड़ै, बहुरि न लागै डार।।

(अथवा)

बोली एक अमोल है, जो कोई बोलै जानि।

हिये तराजू तौलिकै, तब मुख बाहर आनि।

————